International Journal of Applied Research 2016; 2(1): 242-243

International Journal of Applied Research

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 242-243
www.allresearchjournal.com
Received: 15-11-2015
Accepted: 16-12-2015

डॉ. एस. रज़िया बेगम
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, विज्ञान एवं मानविकी संकाय एस.आर.ऍम यूनिवर्सिटी, तमिल नाडू – 603203

Correspondence
डॉ. एस. रज़िया बेगम
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, विज्ञान एवं मानविकी संकाय एस.आर.ऍम यूनिवर्सिटी, तमिल नाडू – 603203

मुस्लिम समाज में स्त्री शिक्षा: नासिर शर्मा की कहानी "पत्थर गली" के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. एस. रज़िया बेगम

वर्तमान समय में भी मुस्लिम समाज अपने पुरातनपंथी खयालों और रुढ़िवादी सोच से बहार निकलने में सक्षम नहीं हो पा रहा है, उसे इस बात का ज्ञान नहीं ऐसा कहना अतिश्योक्ति ही होगा क्योंकि मुस्लिम समाज में पितृसत्ता सोच इतना हावी है की यह सोचना ही नहीं चाहता की वर्तमान समय में उन बातों को छोड़ना होगा जो एक काल विशेष में तो सही था पर वर्तमान में हानिकारक बन रहा है, करणवश जिसका असर मुस्लिम समाज में स्त्रियों की स्वतंत्रता पर बराबर दिखाई पड़ रही है, गौर फरमाये तो सर सैयद अहमद खां ने सव्यं यह माना था की किसी भी देश की उन्नति शिक्षा पर ही निर्धारित है, और उन्होंने मुस्लिम युवकों की शिक्षा के प्रबंध भी किये, आगे उन्होंने 'सन 1863 में स्त्री शिक्षा पर जो वक्तव्य दिया था, जिसमे उन्होंने स्त्री शिक्षा पर जनता का ध्यानआकृष्ट किया था पर आगे चलकर उन्होंने भी स्त्रियों के लिए वही पुराने ढंग की शिक्षा को ही ठीक बताया' ।[1] सवाल यह है सब कुछ जानते और समझते हुए भी सर सैयद अहमद खां को पुराने ढंग की ही शिक्षा मुस्लिम स्त्रियों के लिए क्यों ठीक लगी? ऐसा लग रहा है की वो भली-भांति जानते थे की कहीं स्त्री अपने अधिकार के प्रति सचेत न हो जाये इसिलए उसे उतना ही शिक्षित किया जाये जितना की घर सँभालने के लिए आवश्यक है, और तब से आज तक यही पुरुष निर्मित फार्मूला मुस्लिम समाज में निरंतर चला आ रहा है। मुस्लिम समाज में ऐसे कई दकियानूसी सोच है जो स्त्रियों को कमज़ोर बनाती है और उसे कोई भी निर्णय लेने में पुरुषों की ओर ताकना पड़ता है। जैसे पर्दा की बात की जाये तो पर्दा भी पुरषों का ही इजाद किया हुआ है, वह अपने भीतर का भय हमें उडाये हुए हैं और चाहते है की हम अपने हर कार्य के लिए उनकी तरफ ही मुहं उठाये खड़े रहे, इससे साफ़ जाहिर होता है की इस समाज में अधिकतर औरतों की क्या अहमियत है। इसिलए सिमोन द बोउवा ने कहा भी था –"औरतें तो बनाई जाती है, वो हर बार नए मरदाना समाज में नए-नए तरीके से इजाद की जाती रही है।" [2]

मुस्लिम समाज में पुरुष मानसिकता इतनी निकृष्ट है की आए दिन नए-नए हथकंडे अपना रहे है और धर्म को इस तरह तोड़-मरोड़ कर पेश कर रहे है और साथ ही इसमें अपने आप इसमें नए-नए हदीस जोड़ दे रहे है की स्त्रियों को घर की चारदीवारी में कैद कर रख सखे और उनकी खातिरदारी के लिए स्त्रियाँ हरदम तैयार रहे और अपनी अज्ञानता के कारण वो मुर्ख बन उनसे जवाब-तलब भी नहीं कर पाती, और इस लिए नासिरा कहती है की जान लीजये – "मर्द को बेलगाम अधिकार इस्लाम ने नहीं दिए। उसने औरत की कमजोरी के कारण धर्म के नाम पर बेलगाम अधिकार प्राप्त कर लिए हैं। औरत की अज्ञानता का लाभ उठाते है मर्द।"[3]

वर्तमान में भी नासिर शर्मा की कहानी 'पत्थर गली' मुस्लिम समाज का आइना है इसलिए कहा जा सकता है की इसकी प्रासंगिकता ज्यों की त्यों बनी है, यह कहानी मुस्लिम समाज के यथार्थ को प्रमाणिक रूप से प्रस्तुत करने में सफल है, सामान्य तौर पर किसी भी कहानीकार को अपनी कहानी में कहानीपन बनाये रखना आवश्यक होता है जिससे की पाठक वर्ग उसमे बने रहे, पर जब साहित्यिक कहानी की बात होती है तो यह देखना अवश्यक होता है की वह केवल मनोरंजन मात्र नहीं बल्कि उसमे समाज की उन समस्याओं को उजागर करने का दम होना चाहिए जिससे की समाज में बदलाव आ सके और नासिर शर्मा की कहानियों में यह बात देखी या समझी जा सकती है उन्होंने जिस तरह मुस्लिम समाज की स्त्रियों के जीवन के यथार्थ रूप को प्रमाणिक रूप से अपने कहानियों के माध्यम से सामने लाने में सफल हुई है, जो मुस्लिम समाज को दिशा प्रदान करने में उनकी सक्षम दिखाई पड़ती है। नासिरा शर्मा ने अपने कहनियों के बारे में लिखा है –"ये कहानियां गहाजरत के दुःख और मुजरों के सुख का मुह्भोंग करती हुई एक ऐसी गली की सैर कराती हैं जो पत्थर की गली है। इस पत्थर की गली के रहने वाले अपने निकास के लिए छटपटाते नज़र आते हैं, अपनी पहचान के लिए वह ज़दोजहद के समंदर में गोते लगाते हैं, रुढ़िवादीता की बेड़ियों को तोड़कर खुले आसमान में उड़ना चाहते हैं, पंखों को पसारकर उसमे सूरज की गर्मी और रोशनी भरने के लिए तडपते हैं और इस कशमकश में पत्थर से टकराकर लहूलुहान हो जाते हैं।" [4]

नासिर शर्मा की कहानी पत्थर गली को अपने आलेख का आधार बनाने का कारण है, यह कहानी मुस्लिम स्त्री के जीवन से जुड़े यथार्थ को सामने लाने में सफल हुई है, की मुस्लिम समाज वर्तमान में भी क्यों शिक्षा के स्तर पर सबसे पिछड़ा हुआ है और गौर फरमाए तो यह कहानी उस रहस्य को परत दर परत खोलती नज़र आती है- 'पत्थर गली' कहानी में फरीदा मुख्य पात्र के रूप में है और अपने भाई से जायदा काबिल होने के बाद भी सवतंत्र रूप से अपने मन मुताबिक नहीं पढ पा रही है, इस कारणवश बचपन से लेकर अब तक उसे हर समय यह क्यों लगता है की शायद उसे भाग जाना चाहिए इस घुटन भरे माहौल से। कहानी को पढ़ते हुए यह समझा जा सकता है की फरीदा का बड़ा भाई सामंती मानसिकता से ग्रसित तो वही माँ रूढ़िवादि मानसिकता से ग्रषित और वो दोनों उसकी ज़िन्दगी में कुछ भी बेहतर रहने नहीं देते। नाकाबिल भाई को हमेशा अपनी ही पढ़ी रहती है उसे अपने छोटे भाई-बहनों से कोई लेना-देना ही नहीं और उस पर भी माँ हमेसा उसी के साथ बनी रहती है यह सारे माहौल उसके भीतर घुटन पैदा कर रही थी। क्योंकि उसे तो उसकी मर्ज़ी का कुछ करना ही नहीं है स्कूल भी जब घरवाले चाहेंगी तो जाना है वर्ना नहीं घर पर भी सब उसे यंत्र सामान देखने लगे थे, फरीदा सोचती है उसे तो बस – "दुःख-दर्द बाँटने है, समस्याएँ हल करनी है, और उसके बाद उसे उफ़ तक भी नहीं करना है''[5]

कहानी में फरीदा के भाई की मानसिकता मुस्लिम समाज की पुरुषवादी मानसिकता को दिखाती है, फरीदा ने जब अपनी इच्छा जताई की उसे कला केंद्र जाना है नाटक के लिए तो सबने ऐसे मना कर दिया जैसे कोई अपराध है और वह न चाहते हुए भी दिल मसोस कर रह गई पर उसने अपने को मना लिया पर एक दिन उसे डिबेट में जाना था पर वहां लड़के साथ होंगे इसिलिय वहां जाने से भी रोक दिया जाता है - "लड़कियों को घर में रहने चाहिए। कमर पतली और हाथ मुलायम रखने की कोशिश करनी चाहिए। मर्द्दमा लड़कियां या औरतें नहीं होती हैं।" [6]

कहानीकार ने कहानी में फरीदा के माध्यम से बताया है की केवल फरीदा ही नहीं बल्कि उसकी सहेलियां भी यही महसूस कर रही है, हर जगह पुरुष उसी सामंती और रुदिवादिता मानसिकता से ग्रसित है और जिसे कहानी के पुरुष पात्रों के माध्यम से देखा जा सकता है की उनको तो न शिक्षा में और नकाम में दिल लगता है बस बाप के पैसे में बैठ ऐश करना चाहते है, और जिस घर में लड़की का बाप नहीं है वहां तो हाल और बुरा है तो उसे तो अपने बाप के उम्र वाली व्यक्ति से शादी करनी पड़ती है जैसे की फिरोजा की शादी हुई, वह उसकी मज़बूरी ही थी, नहीं तो फरीदा सोचती है –" जो बाप के बराबर का आदमी हो, वह भी कहीं सपनों का नाजुक विचारों का...दिल की धड़कन का शहजादा बन सकता है ?" [6]

कहानी की दूसरी पात्र नाहिदा पर गौर फरमाए तो दीखता है की उसका मंगेतर का भी यही हाल है पढाई-लिखाई में कमज़ोर है और जब नाहिदा के माँ-बाप ने रिश्ते से इंकार कर दिया तो वह नाहिदा में ही कमजोरी ढूंढने लगा और नाहिदा के घरवालो ने या सव्यं नाहिदा ने भी पता नहीं किस मज़बूरी वश तीन बच्चे के बाप प्रिंसिपल से शादी कर ली और उसके विचार से उसने उन लोगो को सबक सिखाया है, पर फरीदा इस कहानी में एक आजाद और शाशक्त ख्याल वाली लड़की है इसलिए वह इस बात को स्वीकार नहीं कर पा रही थी और उसका मानना था की नाहिदा के घरवाले इंतेज़ार करते उसकी नौकरी मिलने का जिससे की उसकी ज़िन्दगी बेहतर हो सकती थी। नाहिदा पढ़ी- लिखी समझदार थी पर वह भी अपने हक़ के लिए आगे नहीं आती है, क्योंकि मुस्लिम समाज में स्त्रियों की परवरिश ही ऐसी होती है की वो अपने लिए अपने हक़ की बात नहीं रख पाते। गौर फरमाए तो नासिरा शर्मा भी कहती है की – ''पढ़ी-लिखी औरतें अपने अधिकारों के बारे में जानकारी रखें और शोषण के विरोध में तर्क, तथ्य और दलील और हौसले से काम लें।"[7]

किसी भी समाज में हम यह देखते आयें है की किस तरह स्त्रियों का कुछ कहना यह अपने विचार प्रकट करना सीधे उसके ज्ञान से या सूझ-बुझ से जोड़ा जाता है, ज्ञान की प्राप्ति या वृद्धि न कर सके इसलिए उसे घर के कामकाज में इतना उलझाये रखते है की वह कुछ सोच ही न पाए जैसे इस कहानी में फरीदा घर पहुँचती है उसके साथ ही सवाल- जवाब होने लगता है और वह उसका हिस्सा नहीं बनाना चाहती है, पर आज उन सारे उलझनों के बीच फरीदा का मन बेख़ौफ़ हुए अपनी हक़ की बात कहने को कर रहा था और कहती भी है पर उल्ट उसके अपने भाई द्वारा मार खानी पड़ती है, पर वह खुद अपनी पढाई जारी न रखने की धमकी दे माँ से हमेशा पैसे ऐंठा करता था। इन सबको भूल माँ चाहती थी की फरीदा को वही करना है जो उसके भाई सोचते है चाहे वो गलत ही क्यों न हो पर आज हिम्मत कर सब कह डालती है जिसका सपना उसने सोते- जागते देखा है, पर माँ को लगता है की उसे दीवानगी छाई है, इसीलिए बडबडा रही है – 'में न तो नाहिद बनना चाहती है और न जुलेखा और न खदीजा' बल्कि आज अपने मन की छुपी बात कह ही डालती है की वह आज़ाद खयालों में ही नहीं बल्कि असल ज़िन्दगी में भी आजाद रहना चाहती है और वह उसे नहीं मिल पा रहा है जिससे उसके भीतर एक घुटन पैदा हो जाती है। गौर फरमाने वाली बात है की फरीदा एक आजाद सोच रखने वाली लड़की है परिस्थिति के साथ समझौता करने वाली लड़की नहीं है पर फिर भी उसका विद्रोह का कोई अंजाम नहीं निकलता। इस पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियों की स्तिथि में बहुत जायदा अंतर नहीं दिखाई पड़ता, पर फिर भी इस कहानी के माध्यम से यह समझा जा सकता है की मुस्लिम स्त्रियों इस घुटन भरी ज़िन्दगी के प्रति विद्रोह और इससे बहार निकलने का रास्ता अब वह खोजने लगी है और वो खुद भी इस कार्य के लिए प्रयासरत दिखाई पड़ती है। इस कहानी में साफ दिखाई पड़ता है की मुस्लिम समाज का अधिकाधिक पुरुष क्या सोच रहा है, मर्द न तो सव्यं पढना चाहते है और न स्त्रियों को पढने देना चाहते है, यह बात आज जाग- जाहिर इसमें छुपाने वाली बात ही नहीं क्योंकि समाज में बढ़ रहे अमानवीय व्यावहर तभी दिखाई पड़ता है जब आप शिक्षा के रूप में कमज़ोर होंगे और इस समाज में शिक्षा की कमी न केवल स्त्रियों की है बल्कि पुरुषों का भी यही हाल वो न तो खुद विकसित होना चाहते है न ही अपनी घर की स्त्रियों को विकसित होता देखना चाहते है, वो तो बस कूपमंडूक की तरह बस धर्म नाम के खोल में छिपा रहना चाहते है, जिससे की उन्हें मनमानी करने को मिले और स्त्रियाँ उनकी सेवा करें, इसीलिए आए दिन हम समाचारों द्वारा उनकी तुच्छ मानसिकता से परिचित होते है। इस कहानी के द्वारा नासिर शर्मा ने मुस्लिम समाज के नब्ज़ को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है, जिससे मुस्लिम समाज के भीतर छुपी हुई रूढ़िवादिता को दर्शाती है तो साथ ही नारियों के भीतर उस घुटन भरे परिवेश से बहार निकलने की चेतना अब सुलगती देखी जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 इस्लाम और आधुनिक भारत- प्रो. मुकुट बिहारी लाल, (पृष्ठ-23)
2 स्त्री उपेक्षिता सिमोन द बोउवार- अनुवाद- प्रभा खेतान पृष्ट संख्या- (पृष्ठ-19)
3 "नासिर शर्मा शब्द और सवेंदना की मनोभूमि: 'औरत के लिए औरत: व्यापक सरोकार का लेखन' डॉ. कमलेश सचदेव- (पृष्ठ- 312)
4 मुस्लिम समाज सिर्फ एक ग़ज़ल नहीं- गोपाल राय- नासिर शर्मा शब्द और सवेंदना की मनोभूमि- (पृष्ठ- 145)
5 पत्थर गली- (पृष्ठ- 153)
6 वही- (पृष्ठ- 154)
7 वही- (पृष्ठ - 155)
8 "नासिर शर्मा शब्द और सवेंदना की मनोभूमि: 'औरत के लिए औरत: व्यापक सरोकार का लेखन' डॉ. कमलेश सचदेव- (पृष्ठ- 312)